National Journal of Advanced Research
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-216X
Received: 28-01-2026, Accepted: 27-02-2026, Published: 14-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 42-43

# कबीर की उलटबांसियों में सूर्य–चंद्र प्रतीक एवं खगोलिक चेतना

**डॉ. दिनेश कुमार यादव[1], डॉ. हर्षराज शुक्ला[2], मदन मोहन पाण्डेय[3]**
[1] प्रभारी प्राचार्य, भगवन बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय दिव्यगवां जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] अतिथि विद्वान, भगवन बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय दिव्यगवां जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[3] शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

**सारांष**
इस शोध–पत्र में कबीर की उलटबांसियों में प्रयुक्त सूर्य–चंद्र प्रतीकों के महत्व एवं खगोलीय चेतना की व्याख्या की गई है। कबीर तुलसीदास–आदि भक्त कवियों से बिलकुल भिन्न दृष्टि रखते हुए साधना और जागरूकता की परक रूपकों के रूप में सूर्य और चंद्र का उपयोग करते हैं। आधुनिक खगोल विज्ञान के अनुसार सूर्य हमारे सौरमंडल का केन्द्रस्थ तारा है[1], पृथ्वी का अक्ष 23.5° टिल्टेड है[2], तथा चंद्रमा पृथ्वी का प्राकृतिक उपग्रह है[3],। इन वैज्ञानिक तथ्यों की रोशनी में कबीर के प्रतीकात्मक चित्रण को समझने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि कबीर ने अपनी रचनाओं में ब्रह्माण्ड की क्षण भंगुरता और दिव्यता को उजागर करने हेतु खगोलीय घटनाओं को बिंबित किया है। भारतीय वैदिक खगोल–परम्परा में भी सूर्य, चंद्र, ग्रह–नक्षत्रों का उल्लेख मिलता है [4, 5] और कबीर का संवाद उसी चेतना की लोक परम्परा से जुड़ता है। इस प्रकार, कबीर की उलटबांसियों में सूर्य–चंद्र प्रतीक आधुनिक खगोलीय ज्ञान और भारतीय पारम्परिक खगोलीय चेतना का संगम प्रस्तुत करते हैं।

**मूलशब्द:** कबीर, उलटबांसियाँ, सूर्य प्रतीक, चंद्र प्रतीक, खगोलीय चेतना, आधुनिक खगोल विज्ञान, भारतीय ज्ञान परंपरा, छाया, उपग्रह, उल्टबाँसी

## भूमिका
कबीरदास निर्गुण भक्ति की प्रमुख धारा के कवि थे, जिनकी उलटबांसियाँ रहस्यमयी और चिंताजनक भाषा में परम तत्व का बोध कराती हैं[6]। इन उलटबांसियों में वे साधारण तर्क से परे प्रतीकों का प्रयोग करते हैं ताकि सुनने में अचरज उत्पन्न हो और श्रोताओं को गूढ़ अर्थ निकालने हेतु प्रेरित किया जा सके। उदाहरणत: कबीर कहते हैं– "देवी बड़ी ना देवता, सूरज बड़ा ना चंद; आदि अंत दोनों के गुरु के गोबिंद। "यहाँ देवता, सूरज–चंद्र की महिमा को तिलांजलि देकर उन्हें सर्वश्रेष्ठ गुरुदेव से भी निहित श्रेष्ठ मान लिया गया है[7]। इसी क्रम में गुरु ग्रंथ साहिब में उद्धृत कबीर वचन "कबीर! सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह।" कहता है कि मनुष्य का शरीर भी सूरज–चंद्र के उदय–अपनिष्ट की भाँति क्षणभंगुर है[8]। इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि कबीर ने ब्रह्माण्डीय सूक्ष्मदर्शन को अपनी काव्यबाणी में आत्मसात किया है।

## विषय प्रवर्तन
कबीर की रचनाएं 15वीं सदी के समाज–सांस्कृतिक परिवेश में उभर कर आईं। इस समय योग–तत्ववाद, निराकार भक्ति और भौतिक मूल्यों के परे आध्यात्मिक चेतना का समन्वय चल रहा था। कबीर पर योगाचारों का गहरा प्रभाव था, इसलिए वे सत्य को व्यंजक रूपकों में उद्घाटित करते हैं[9]। दूसरे संतों की तरह कबीर ने भी उलटबाँसी का सूत्र अपनाया – ऐसा परावर्तित ज्ञान, जिसमें "चंद्रविहीन चांदनी, सूर्यविहीन सूर्यप्रकाश" जैसे विरोधाभासी प्रतीकों से अंतर्निहित सत्य व्यक्त किया जाए[10]। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने टिप्पणी की है कि कबीर की रहस्यवादित अभिव्यक्ति वेदान्त और हठयोग के तत्वों पर आधारित है[11]। अतः उलटबाँसियों के पीछे जो आध्यात्मिक बोध है, वह प्राचीन सिद्धों एवं योगियों के सिद्धांतों से जुड़ी व्यापक खगोलीय दृष्टि को प्रतिबिंबित करता है[9]।

## हिंदी साहित्य की वैज्ञानिकता का विवेचना
सच्चा साहित्य जीवन और युग की झाँकी होता है, तथा इसे यथार्थ की वैज्ञानिक समझ से जुड़ा होना चाहिए[12]। महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "अन्धकार वहीं जहाँ आदित्य नहीं है; मृत देश वह जहाँ साहित्य नहीं है[12] यानि साहित्य ही समाज में विज्ञानसदृश उजियारा लेकर आता है। इसी भावना में शैलेंद्र चौहान लिखते हैं कि "वैज्ञानिक सोच और उसकी साहित्यिक परिणति ही साहित्य की वह लोकमंगल धारा है" जो मानव को प्रगतिशील बनाती है[13],। हिंदी साहित्य में विज्ञानकथाओं से लेकर कल्पनाशील रचनाओं तक का विकास दिखता है, जिससे समाज को वैज्ञानिक चेतना प्राप्त हुई है। इस संदर्भ में कबीर की उलटबाँसियाँ भी एक प्रयोगात्मक रूपक जैसी हैं, जहाँ अर्थ को समझने हेतु बुद्धि और अनुभव दोनों की आवश्यकता होती है।

## कबीर की उलटबांसियों में सूर्य और चंद्र प्रतीकों का प्रयोग
कबीर ने अपने दोहों और पदों में बार–बार सूर्य एवं चंद्र के रूपकों का प्रयोग किया है। जैसे गुरु ग्रंथ साहिब में उद्धृत दोहे में वे कहते हैं कि

"कबीर! सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह"[8],
अर्थात शरीर भी सूर्योदय–चंद्रास्त की तरह क्षणिक ही है। इसी प्रकार एक प्रसिद्ध दोहे में वे लिखते हैं कि
"देवी बड़ी ना देवता, सूरज बड़ा ना चंद३
आदि अंत दोनों बड़े के गुरु के गोबिंद"[7]।

इस दोहे में सूरज–चंद्र की महिमा को भी अंतिम गुरु–गोविंद से छोटा बताया गया है, जो सर्वोच्च चेतना का प्रतीक है। कबीर ने एक और पद में मौसम और प्रकृति के परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए लिखा है:

"धीरे–धीरे रे मन धीरे सब कुछ होय,
माली सिंचे सौ घड़ा ऋतु आए फल होय।

"यद्यपि इसमें स्पष्ट रूप से सूर्य–चंद्र नहीं आये, पर सूर्योदय–चांदनी की धीमी प्रक्रिया का वर्णन है। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि कबीर ने सूर्य–चंद्र को केवल प्राकृतिक वस्तुओं के

रूप में नहीं, बल्कि जीवन के आशय और आध्यात्मिक सत्य के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है।

## आधुनिक खगोल विज्ञान के आलोक में इन प्रतीकों की व्याख्या

आधुनिक खगोलशास्त्र के अनुसार सूर्य हमारे सौरमंडल का केन्द्रस्थ तारा है जिसका गुरुत्वाकर्षण सभी ग्रहों को अपनी कक्षा में बांधे रखता है[1]। पृथ्वी की परिक्रमा और अपने अक्षीय झुकाव के कारण सूर्य की किरणें वर्ष भर अलग–अलग कोण से उतरती हैं, जिससे ऋतुओं का चक्र बनता है [2,14]। इसके विपरीत, चंद्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है, जो लगभग 3.84 लाख किमी की दूरी पर पृथ्वी की परिक्रमा करता है[3]। चंद्रमा की अपनी कोई रोशनी नहीं होती; यजुर्वेद में भी उल्लेख है कि चंद्रमा को सूर्य की किरणों से प्रकाश मिलता है[5],। इन वैज्ञानिक तथ्यों की रोशनी में कबीर के दोहों की व्याख्या की जा सकती है: जैसे सूरज–चंद्र के उदय–अस्त जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति को दर्शाते हैं, वैसे ही उनका स्वभाव प्रकाश फैलाने का है लेकिन तब तक उनका अस्तित्व है जब तक वे प्रकाशमय हैं। कबीर ने भ्रमित शब्दों में यह संदेश दिया कि प्रकृति के ये विराट पिंड भी परम सत्य के सामने छोटे हैं।

## भारतीय ज्ञान परंपरा में खगोलिक चेतना एवं कबीर का संवाद

भारतीय वैदिक परम्परा में खगोल–विज्ञान (ज्योतिष) को वेदांग माना गया था[4]। ऋग्वेद, सतपथ ब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रंथों में नक्षत्रों, मासों, ऋतुओं, उत्तरायण–दक्षिणायण, सूर्य–चंद्र आदि का विस्तृत उल्लेख है[4]।

यजुर्वेद में यह ज्ञात है कि चंद्रमा सूर्य की किरणों के कारण प्रकाशमान होता है[5], जिससे इस दृष्टि में वैज्ञानिक विचार उभरते हैं। पुराणकाल और बाद में खगोलग्रंथों (जैसे लग्ध ज्योतिष आदि) में ग्रहण, गणना, खगोलीय गति आदि का विवेचन होता रहा। इन परम्पराओं के पृष्ठभूमि पर कबीर का दृष्टिकोण आया – वे सूर्य–चंद्र का दृश्य ज्ञान न मानकर उन्हें आध्यात्मिक शिखरत्व का द्योतक मानते हैं। कबीर की उलटबांसियाँ इस भारतीय खगोलीय चेतना का सूक्ष्मरूप हैं, जो बाहरी मायाजगत को उलटी स्थिति में दिखाकर अंतर्ज्ञान को जगाती हैं।

## निष्कर्ष / परिणाम

इस गहन अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि कबीर की उलटबांसियाँ आधुनिक विज्ञान और भारतीय वैदिक खगोलीय चेतना का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती हैं। कबीर ने सूर्य–चंद्र को पारलौकिक ज्योति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया, परंतु उनकी आकृति भी वैज्ञानिक तथ्यों से संकेत ग्रहण करती है। एक ओर भारत की परम्परा में सूर्य–चंद्र की महिमा व खगोलीय गति का वर्णन है [4, 5], वहीं आधुनिक विज्ञान उन्हें क्रमशः तारे और ग्रह–उपग्रह के रूप में समझता है [1, 3]। कबीर की कविताएँ इन दोनों दृष्टिकोणों को जीवंत रूप में जोड़ती हैं वे संसार के दृश्य को उल्टा कर दिखाकर सत्य का बोध कराती हैं। संक्षेप में, कबीर की उलटबांसियाँ न केवल साहित्यिक सौंदर्य की उच्च श्रेणी हैं, बल्कि उनमें समाहित सूर्य–चंद्र प्रतीक खगोलीय चेतना को वैज्ञानिक विश्लेषण के साथ जोड़कर मानव जागरूकता का अद्वितीय बोध कराते हैं [8, 1]।

## संदर्भ


1. अखण्ड ज्योति (अक्तूबर 1984), कबीर की उलटबांसियाँ [6]।
2. श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पंजाबी), गुरु अर्जन देव (1521–1606) द्वारा संकलित [8]। (कबीर रचनाएँ)
3. Sant Kabir Das ke Dohe, Cy,x Dil Say [7]। (प्रसिद्ध कबीर दोहे)
4. चौहान, शैलेंद्र. वैज्ञानिक चेतना और साहित्य, समता मार्ग (जून 2022) [12][13]।
5. NASA Science, The Sun, (NASA Official Site)[1][14]।
6. NASA Science] Moon Facts, (NASA Official Site)[3]।
7. NASA SVS, Solar Eclipse Animation, (कैसे ग्रहण बनते हैं) [15]।
8. NASA SVS, Solstice Animations, (पृथ्वी के अक्षीय झुकाव एवं ऋतुओं का चित्रण)[2]।
9. विकिपीडिया (हिन्दी), वैदिक खगोल विज्ञान [4][5]। (वैदिक काल में खगोलीय ज्ञान)